मध्यभारत की कला, संस्कृति एवं पुरातत्त्व

नागेश दुबे

मोहन लाल चढ़ार

Published by
Satparkash Katla
SSDN PUBLISHERS AND DISTRIBUTORS
5A, Sahni Mansion, Ansari Road
Daryaganj, New Delhi 110002 (India)
Ph: 011-47520102
E-mail: ssdn.katla@gmail.com
www.ssdnbooks.com

मध्यभारत की कला, संस्कृति एवं पुरातत्व

© प्रो. नागेश दुबे एवं डॉ. मोहन लाल चढ़ार

₹ 3500

सर्वाधिकार सुरक्षित। पुस्तक का कोई भी भाग लेखक की पूर्वानुमति के बिना किसी भी रूप में पुनर्प्रकाशित नहीं किया जा सकता है।

प्रथम संस्करण 2017

ISBN: 978-93-8357-598-5

Printed at New Delhi, India

इस पुसत्क में प्रकाशित आलेख, लेखकों के अपने विचार हैं, इन विचारों से सम्पादकगण प्रकाशक अथवा मुद्रक का सहमत होना अनिवार्य नही है

2 पटनागंज रहली के जैन मंदिरों का मूर्ति एवं वास्तु शिल्प

डॉ. शिवकुमार पारोचे

पटनागंज दिगम्बर जैनों का अतिशय क्षेत्र है। यह मध्यप्रदेश के सागर जिले की रहली तहसील में स्थित है। सोनार और देहार नदियों के संगम पर अवस्थित रहली नगर सागर से दक्षिण पूर्व की ओर 42 कि मी0 की दूरी पर 23^0 और 35' उत्तर तथा $79^0 00'$ पूर्व में स्थित है।[1] सागर, देवरी, गढाकोटा एवं जबलपुर से रहली नगर, सड़क मार्ग द्वारा जुडा हुआ है । यहां सोनार नदी के उस पार दिगम्बर जैन धर्मावलम्बियों का तीर्थक्षेत्र पटनागंज स्थित है । इस सोनार नदी की पहचान प्रोफेसर एस.एम. अली ने प्राचीन काल की शुनी नदी से की है।[2] नदी पार करने के लिए पक्का पुल बना हुआ है। सोनार नदी के तट पर स्थित अतिशय क्षेत्र पटनागंज का प्राकृतिक दृश्य अनुपम है। यहां कोलाहल से दूर एकान्त एवं शांत वातावरण में जैन धर्म के अनुयायियों ने मंदिरों का एक पूरा क्षेत्र बना दिया है। यहां कुल 28 मंदिर विद्यमान हैं। पटनागंज के मंदिरों का विवरण इस प्रकार है :–

मंदिर क्रमांक–1

इस मंदिर का मुख पूर्व दिशा की ओर है। मंदिर में गर्भगृह और उसके ऊपर शिखर बना हुआ है। गर्भगृह का भीतरी भाग आयताकार है । गर्भगृह के भीतर भगवान शांतिनाथ की प्रतिमा स्थापित है । इस प्रतिमा में भगवान शांतिनाथ को पद्मासन मुद्रा में दिखाया गया है। उनके सिर पर केशराशि है। कर्ण कुण्डलधारी हैं। प्रतिमा की पीठिका पर दोनों ओर एक–एक सिंह है और मध्य में लांछन हरिण का अंकन है। पादपीठ पर देवनागरी लिपि का लेख अंकित है। लेख में संवत् 1864 की तिथि अंकित है। जिसके अनुसार इस मंदिर का निर्माणकाल 1807 ईसवी में हुआ था। इस लेख में अतिशय क्षेत्र का वर्णन किया गया है। गर्भगृह के ऊपर शिखर बनाया गया है। शिखर का आधार भाग वर्गाकार है और ऊपर की ओर वह गोलाकार निर्मित है। शिखर का ऊपरी भाग आमलक, कलश के द्वारा सज्जित है। परवर्ती कालीन यह शिखर नागर शैली और गुम्बद शैली के मिश्रित स्वरूप का है ।

मंदिर क्रमांक –1

मंदिर क्रमांक–2

यह मंदिर भी मंदिर क्रमांक–1 के अनुसार ही निर्मित है। मंदिर के गर्भगृह का भीतरी भाग आयताकार है। गर्भगृह के भीतरी भाग में चन्द्रप्रभ की प्रतिमा पद्मासन मुद्रा में स्थापित है। प्रतिमा के पादपीठ पर दो सिंह का अंकन है। दोनों सिंह के मध्य अर्द्धचन्द्र है। पादपीठ पर देवनागरी लिपि में लेख अंकित है। दो पक्ति के लेख में संवत् 1864 की तिथि अंकित है। लेख में श्री कंदरक के पुत्र श्री भगवत के पुत्र श्री महेन्द्र श्रावत श्री सिंघई के पुत्र श्री बलजुत के पुत्र श्री सिंघई कंमनित आदि का उल्लेख हुआ है। गर्भगृह के भीतरी भाग गोलाकार गुम्बदनुमा बना हुआ है। गर्भगृह के ऊपर शिखर निर्मित है। जो नीचे वर्गाकार है और ऊपर ग्रीवा तक गोलाकार बना हुआ है। ग्रीवा के ऊपर आमलक, कलश आदि से सज्जित है। प्रतिमा के समान ही इस मंदिर का निर्माण काल 1807 ईसवी है। मंदिर का मुख पूर्व दिशा की ओर है।

मंदिर क्रमांक–3

इस मंदिर में मुनि सुव्रतनाथ की संगमरमर पत्थर की बनी हुई प्रतिमा पद्मासन मुद्रा में आसीन है। प्रतिमा के पादपीठ पर दो पंक्ति का लेख अंकित है । लेख में संवत् 1545 की तिथि अंकित है। लेख से पता चलता कि प्रतिमा का निर्माण 1488 ईसवी में हुआ है। प्रतिमा के पादपीठ पर मुनि सुव्रतनाथ का लांछन कछुआ भी बना हुआ है। प्रतिमा की ऊँचाई 10 इंच है।

मंदिर क्रमांक–4

यह मंदिर अधिक प्राचीन नहीं है। इस मंदिर के भीतर एक वास्तुखण्ड पर उत्कीर्ण तीर्थंकर प्रतिमा प्रदर्शित है। तीर्थंकर पद्मासनस्थ ध्यानमुद्रा में रथिका के भीतर आसीन है। उनके दोनों ओर एक–एक तीर्थंकर प्रतिमा खड्गासन मुद्रा में है ।

मंदिर क्रमांक–5

यह एक विशाल मंदिर है। मंदिर यद्यपि परवर्तीकालीन है, किन्तु इसका निर्माण प्राचीन परम्परा के अनुसार किया गया है। अधिष्ठान, जंघा, दोहरी वरंडिका और उसके ऊपर शिखर निर्मित है। शिखर का आधार भाग वर्गाकार है जो ऊपर गोलाकार रूप में क्रमशः संकीर्ण होता गया है। शिखर पर रथ–प्रतिरथ निर्मित हैं । लघु शिखर की प्रतिकृतियां बनी हुई हैं चारों दिशाओं में रथिकाओं के भीतर तीर्थंकरों को आसीन दिखाया गया है। ऊपरी वेरंडिका की ऊपर चारों दिशाओं में चार मन्दिर गये हैं। मुख्य शिखर का ऊपरी भाग आमलक और कलश के द्वारा सज्जित है। मंदिर का प्रवेशद्वार पूर्वाभिमुख है। प्रवेशद्वार में चढने के लिए सीड़ियां बनी हुंइ हैं जो बाद में बनाई गई हैं ।

गर्भगृह का भीतरी भाग वर्गाकार है और इसके फर्श इत्यादि का बाद में नवीनीकरण किया गया है। गर्भगृह में अनेक आधुनिक प्रतिमायें संग्रहित करके रखी गई हैं। गर्भगृह में मुख्य प्रतिमा सुव्रतनाथ की है, जिसमें उन्हें पद्मासन मुद्रा में दिखाया गया है। यह वृहत आकार की प्रतिमा है । प्रतिमा के पादपीठ पर देवनागरी लिपि में लेख अंकित है। लेख में तिथि संवत 1835 अंकित है । लेख पॅाच पंक्तियों में लिखा हुआ है। लेख में प्रतिमा के स्थापित कर्त्ताओं की वंशावली दी गई है। मुख्य प्रतिमा के दोनों ओर तीन पंक्तियों में संगमरमर की बनी हुई तीर्थंकर की अनेक प्रतिमाएं स्थापित हैं। सभी प्रतिमाओं के पादपीठ पर अभिलेख अंकित हैं । संवत 1542, 1548 आदि तिथियाँ इन प्रतिमाओं के पादपीठ पर अंकित हैं। गर्भगृह की भित्ति के दायें बायें खड्गासन मुद्रा में पदमप्रभ की प्रतिमाएँ स्थापित हैं । इस प्रतिमा में 20 तीर्थकरों की लघु आकृतियां बनी हुई हैं ।

मंदिर के गर्भगृह की भीतरी भित्ति पर लगभग 200 वर्ष प्राचीन चित्रकारी बनी हुई अत्यन्त आकर्षक है। इन चित्रों में स्थानक राजा, सिंहासनरूढ़ राजा, अश्वारूढ राजा, राजा और रानी, राजमहल के दृष्य, दरबार सज्जित राजा, रानी, परिचारिकाएं, मृगलता, बेल–बूटे सज्जित वृषभ, आदि को चित्रित किया गया है। तीर्थंकरों की आकृतियां भी खड्गासन और आसीन मुद्रा में बनाई गई हैं। इस चित्रकला में मराठा शैली का प्रभाव है। चित्रकला बहुत ही रोचक है। गर्भगृह में मेहराबदार प्रवेशद्वार की आकृतियां चारों ओर बनी हुई हैं।

मंदिर क्रमांक–6

यह मंदिर भी लगभग 200 वर्ष प्राचीन है। मंदिर के वास्तु में किसी प्रकार की कोई विशेषता नहीं है। गर्भगृह में सीड़ियां चढ़कर आना होता है। गर्भगृह की दीवारें दोनों ओर से खुली हुई हैं। गर्भगृह में तीर्थंकर प्रतिमा बाद की प्रतीत होती है। ऊपरी शिखर नागर शैली के अनुकरण पर आमलक एवं कलश से युक्त है।

मंदिर क्रमांक–7 एवं 8

ये मंदिर प्रवेश द्वार का बायीं ओर का भाग है । वस्तुतः यह स्वतंत्र मंदिर नहीं है। इस मंदिर के भीतर एक आयांगपट्ट स्थापित है, जिसमें चारों दिशाओं में तीर्थंकर प्रतिमाएं बनी हुई हैं। भित्ति से संलग्न आदिनाथ की एक प्रतिमा निर्मित है। इसी प्रवेश–द्वार के दायें भाग पर स्थानक मुद्रा में भगवान ऋषभनाथ को प्रदर्शित किया गया है । वस्तुतः मंदिर क्रमांक 7 व 8 ये दोनों प्रवेशद्वार के भाग हैं।

मंदिर क्र. 9,10, 11 तीनों आधुनिक मंदिर हैं इन मंदिरों में क्रमंशः ऋषभनाथ, अजितनाथ व संभवनाथ की पाषाण प्रतिमायें स्थापित हैं। प्रतिमाऐं के पादपीठ पर क्रमशः वृषभ, गज व अश्व लांछन बने हुए हैं।

मंदिर क्रमांक–12

इस मंदिर के गर्भगृह के भीतर सहस्त्रकूट चैत्यालय गोलाकार निर्मित है जिस पर तीर्थंकरों की खड्गासन व आसीन मुद्रा में 1008 मूर्तियां बनी हुई हैं।[3] काले पत्थर से ली प्रतिमा नेमिनाथ की बड़ी आकृति रथिका में बनी हुई है। इस चैत्यालय में संवत 1846 की तिथि अंकित है। यह तिथि एक अभिलेख में अंकित है । एक अन्य रथिका पर चन्द्रप्रभ की आकृति बनी हुई है। जिस पर संवत 1834 की तिथि अंकित है। मंदिर के गर्भगृह की भित्ति में रथिका पर बायीं ओर पार्श्वनाथ तथा अन्य दो तीर्थंकरों की प्रतिमा बनी हुई हैं। दायें भाग की भित्ती से संलग्न पृथक से तीन तीर्थंकर प्रतिमाएं रखी हुई हैं। इनमें से एक प्रतिमा ऋषभनाथ और दूसरी मल्लिनाथ की है । तीसरी प्रतिमा पर कोई लांछन नहीं है। ये तीनों प्रतिमाएं लगभग 200 वर्ष प्राचीन हैं।

मंदिर क्रमांक–13

इस मंदिर में भगवान अभिनन्दन नाथ जी की प्रतिमा खड्गासन मुद्रा में स्थापित है। मंदिर आधुनिक है किन्तु प्रतिमा लगभग 100 वर्ष प्राचीन है।

मंदिर क्रमांक–14

इस मंदिर में श्री सुमितनाथ की पद्मासन मुद्रा में प्रतिमा स्थापित है ।

मंदिर क्रमांक–15

इस मंदिर में पद्मप्रभ की संगमरकर की बनी प्रतिमा स्थापित है। इसमें पद्मप्रभ को पद्मासनस्थ ध्यानमग्न मुद्रा में दिखाया गया है । इस प्रतिमा में चार अन्य तीर्थंकरों को दिखाया गया है। इसमें दो तीर्थंकर पद्मासन मुद्रा में दिखाये गये हैं। प्रतिमा पर संवत् 1548 की तिथि अंकित है।

मंदिर क्रमांक–16

इस मंदिर में काले पत्थर से बनी तीर्थंकर प्रतिमा स्थापित है। इस प्रतिमा पर कोई लांछन नहीं है।

मंदिर क्रमांक–17

इस मंदिर में तीर्थंकर चन्द्रप्रभ की संगमरमर की बनी प्रतिमा स्थापित है । प्रतिमा के पादपीठ पर चन्द्र लांछन दिखलाया गया है । प्रतिमा पर संवत् 1548 की तिथि अंकित है ।

मंदिर क्रमांक–18

इस मंदिर में तीर्थंकर पुष्पदंत की पाषाण प्रतिमा स्थापित है। इस प्रतिमा पर लांछन स्पष्ट नहीं है।

मंदिर क्रमांक–19

इस मंदिर में एक तीर्थंकर प्रतिमा स्थापित है किन्तु इस पर कोई लांछन अंकित नहीं है।

मंदिर क्रमांक 20, 21 व 22 में भी तीर्थंकर प्रतिमाएं स्थापित हैं, किन्तु इन पर लांछन स्पष्ट नहीं है।

मंदिर क्रमांक–23

इस मंदिर में मुख्य प्रतिमा तथा बांयी ओर की प्रतिमा चन्द्रप्रभ की है । इन प्रतिमाओं पर संवत 1548 की तिथि अंकित है । दायीं ओर की प्रतिमा पद्मप्रभ की है। ये तीनों प्रतिमाएं संगमरमर की बनी हुई हैं। मंदिर के गर्भगृह का भीतरी भाग वर्गाकार है और ऊपरी भाग गोलगुम्बदनुमा है। इस मंदिर के फर्श एवं प्रवेश द्वार आदि का नवीनीकरण किया गया है। मंदिर के ऊपर शिखर बना हुआ है जो गोलाकार गुम्बदनुमा है।

मंदिर क्रमांक–24

यह महावीर मंदिर कहलाता है। मंदिर के गर्भगृह के भीतरी भाग में फर्श तथा भित्ति के नवीनीकरण का कार्य किया गया है । गर्भगृह में स्थापित मूर्तियाँ प्राचीन हैं । इस मंदिर में भगवान महावीर की विशालकाय प्रतिमा स्थापित है। यह पद्मासनस्थ प्रतिमा है। मुख्य प्रतिमा के नीचे एक अन्य तीर्थंकर प्रतिमा बनी हुई है जिस पर कोई लांछन नहीं है । मुख्य प्रतिमा के दोनों ओर काले पत्थर की बनी हुई दो लघु तीर्थंकर प्रतिमाएं रथिकाओं में स्थापित हैं। बायें ओर की प्रतिमा महावीर की व दायें ओर की प्रतिमा ऋषभनाथ की है। दोनों प्रतिमाओं की पीठिका पर संवत 1848 की तिथि अंकित है। भगवान महावीर की मुख्य प्रतिमा के दायें पार्श्वनाथ की वृहत आकार वाली प्रतिमा खड्गासन मुद्रा में स्थापित है। गर्भगृह में पार्श्व की बांयी भित्ती पर पार्श्वनार्थ व महावीर की व दॉयी भित्ति पर भी महावीर व पार्श्वनाथ की प्रतिमाएं स्थापित है। गर्भगृह के बाहर चारों ओर प्रदक्षिणापथ है। प्रवेश द्वार के अग्रभाग पर फर्श व दीवारों का नवीनीकरण किया गया है। यह मंदिर अत्यंत विशाल है। गर्भगृह के ऊपर गोल गुम्बदनुमा शिखर बना हुआ है।

मंदिर क्रमांक–25

यह पार्श्वनाथ का मंदिर कहलाता है मंदिर के गर्भगृह में भगवान पार्श्वनाथ की काले पत्थर से बनी हुई प्रतिमा स्थापित है, जिसमें उन्हें पद्मासन मुद्रा में दिखाया गया है। यह पार्श्वनाथ की सहस्त्र फण युक्त प्रतिमा है। यह अद्भुत व दर्शनीय प्रतिमा है। काले पत्थर की बनी इस प्रतिमा में उन्हें पद्मासन मुद्रा में दिखलाया गया है । प्रतिमा के सिर और भुजाओं को घेरे हुए पाषाण मण्डप में एक सहस्त्र सर्पफणों का कलात्मक अंकन है।[4] प्रतिमा पर लेख अंकित है। लेख में रहली नगर का उल्लेख हुआ है और उसे जम्बूद्वीप में स्थित बतलाया गया है। इसमें कुंद कुंद आचार्य भट्टारक श्री महेन्द्र कीर्ति के नाम का भी उल्लेख हुआ है। माघमास की कृष्णपक्ष की तिथि अंकित है । लेख में प्रतिमा के स्थापितकर्त्ता की भार्या और उसके पुत्र, प्रपौत्र आदि के नाम वंशावली के साथ दिये गये हैं। मुख्य प्रतिमा के साथ गर्भगृह में अन्य तीर्थंकर प्रतिमाएं भी स्थापित हैं ।

गर्भगृह के भीतर का ऊपरी भाग गोल गुम्बदनुमा है। इस मंदिर के ऊपर गोल गुम्बदनुमा शिखर बनाया गया है। मंदिर लगभग 200 वर्ष प्राचीन है, लेकिन इसके भीतरी सम्पूर्ण भाग का जीर्णोद्धार व नवीनीकरण किया जा चुका है।

मंदिर क्रमांक–26

इस मंदिर में पद्मावती देवी की संगमरमर से बनी प्रतिमा स्थापित है। पद्मावती देवी जैन धर्म के 23 वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ की यक्षी हैं।[5] इसमें देवी के सर्पछत्र के ऊपर पार्श्वनाथ की लघु आकृति भी बनी हुई है। देवी पद्म पीठिका पर आसीन है । प्रतिमा पर संवत 1580 की तिथि अंकित है। इस मंदिर में क्षेत्रपाल, पार्श्वनाथ आदि की प्रतिमाएं भी प्रतिष्ठित हैं। यह मंदिर वस्तुतः पृथक मंदिर न होकर मंदिर क्रमांक 25 के द्वार के समक्ष स्तंभयुक्त मंडप है। इस मंडप के फर्श आदि का नवीनीकरण किया गया है।

मंदिर क्रमांक–27

इस मंदिर के गर्भगृह में पार्श्वनाथ की एक बड़ी तथा दो छोटी प्रतिमाएं प्रतिष्ठित हैं। इन प्रतिमाओं के लेख में संवत 1548 की तिथि अंकित है। ये प्रतिमाएं संगमरमर की बनी हुई हैं । इनके अतिरिक्त चन्द्रप्रभ की लघु प्रतिमाएं भी प्रतिष्ठित हैं। गर्भगृह के सम्पूर्ण भाग का रंगरोगन करके नवीनीकरण किया गया है। गर्भगृह के ऊपर गोलगुम्बदनुमा शिखर बनाया गया है। शिखर के चारों कोनों पर लघु शिखर बनाये गये हैं। गर्भगृह के समक्ष मंडप आयताकार निर्मित है। मंडप की छत सपाट है।

मंदिर क्रमांक–28

इस मंदिर का आकार भी मंदिर क्रमांक 27 के समान है । इस मंदिर में गर्भगृह और उससे संलग्न मंडप बनाया गया है। गर्भगृह चौकोर निर्मित है। उसमें भित्ति से संलग्न काले पत्थर से बनी पार्श्वनाथ की प्रतिमा रथिका के भीतर स्थापित है । बायें और दायें श्वेत वर्ण की चन्द्रप्रभ की एक एक प्रतिमा प्रतिष्ठित है। गर्भगृह के भीतरी भाग का नवीनीकरण किया गया है। यहां के अन्य मंदिरों के समान ही गर्भगृह के भीतर का ऊपरी भाग गोलगुम्बदनुमा है। गर्भगृह से संलग्न आयताकार मंडप है जिसकी ऊपरी छत सपाट है। गर्भगृह के ऊपर नागर शैली के अनुकरण पर शिखर बनाया गया है। शिखर का ऊपरी भाग आमलक व कलश से सज्जित है । पूर्वाभिमुख निर्मित इस मंदिर के पूर्वी भाग पर गज का अंकन है। शिखर के चार कोनों पर चार लघु देवालय निर्मित हैं ।

इस प्रकार पटनागंज के समस्त मंदिरों का स्थापत्य 17 वीं, 18 वीं शताब्दी का प्रतीत होता है। मंदिरों में स्थापित कतिपय मूर्तियाँ जो अधिक प्राचीन हैं, जिनका समय 16 वीं शताब्दी से पहले का है तथा ये मूर्तियाँ संगमरमर की बनी हुई है, बाहर से लाकर इन मंदिर में प्रतिष्ठित की गई हैं। मंदिरों के स्थापत्य में यद्यपि कोई विशेषता नहीं हैं किन्तु प्राचीन नागर शैली के शिखर और मुगल वास्तु के गोलगुम्बद का मिश्रित स्वरूप शिखर के स्थापत्य में दृष्टिगोचर होता है । पटनागंज के समस्त मंदिरों को एक प्राचीरे से घेरा गया है। यहाँ के जैन समुदाय द्वारा सभी मंदिरों की पूजा की जाती है तथा ट्रस्ट के द्वारा इन मंदिरों की देख रेख की जा रही है।

संदर्भः–

1– पचौरी, एस.एम., रहली तहसील का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य, सरोज प्रकाशन, सागर, पृ. 11
2– अली, एस.एम., ज्यॉग्राफी ऑफ द पुराणाज, पृ. 118–19
3– जैन बलभद्र, भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ, वर्ष 1976, पृ. 177.
4– वही. पृ. 179
5– वाजपेयी, मधुलिका, मध्यप्रदेश में जैन धर्म का विकास, वर्ष 1989, पृ. 15